प्रश्न-अभ्यास

पाठ से—

प्रश्न 1. अपने मन की पीड़ा मन में ही क्यों छिपाकर रखनी चाहिए ?

उत्तर—किसी के सामने अपने पीड़ा को प्रकट करने से केवल उपहास ही सुनना पड़ता है। कोई हमारी पीड़ा को बाँट नहीं सकता है इसलिए अपने मन की पीड़ा को मन में ही छिपाकर रखना चाहिए।

प्रश्न 2. प्रेम को धागे के समान क्यों कहाँ गया ?

उत्तर—जब धागा टूट जाता है तो जुड़ता नहीं है। अगर जुड़ता है तो गाँठ पड़ जाती है उसी प्रकार प्रेम यदि टूट जाता है तो उसे जोड़ा नहीं जा सकता। यदि जोड़ने का प्रयास भी किया जाय तो उसमें गाँठ पड़ ही जाती है। इसलिए प्रेम को धागे के समान कहा गया है।

प्रश्न 3. किसी से कुछ माँगने के कर्म को कैसा बताया गया है और क्यों ?

उत्तर—किसी से कुछ माँगने के कर्म को मृत्यु के समान बताया गया है क्योंकि यदि किसी से कुछ माँगते हैं यदि वह नहीं देता है तो हमारा काम बिगड़ जाता है अर्थात् अपने काम को हम नहीं कर सकते। जैसे—मरा व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता है।

प्रश्न 4. सज्जनों की संपत्ति किस कार्य के लिए होती है ?

उत्तर—सज्जनों की संपत्ति परोपकार के लिए होती है। जैसे पेड़ परोपकार के लिए फलता है तथा नदियाँ परोपकार के लिए बहती है।

प्रश्न 5. रहीम की कुछ सुक्तियाँ नीचे दी गई हैं। पाठ के आधार पर उन उदाहरणों को लिखिए जो उन सुक्तियों के प्रणाम-स्वरूप दिए गए हैं।

(क) अच्छे लोगों पर बुरे लोगों की संगति का बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है।

उत्तर— जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्याप्त नहि, लपटे रहत भुजंग ॥

(ख) भले लोग (सज्जन लोग) परोपकार के कार्य पर खर्च करते हैं।

उत्तर— तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पानि।
कही रहीम पर काज हित, संपत्ति सँचहिं सुजान ॥

(ग) हमें बड़े-छोटे सभी का सम्मान करना चाहिए।

उत्तर— रहीम देखि बड़ेन को, लघु न दीजै डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि ॥

(घ) दूसरों का भला करने वालों का अपने आप भला हो जाता है ?

उत्तर—यों रहीम सुख होत हैं, उपकारी के संग।
बाँटनवारे को लगे, ज्यों मेंहदी का रंग ॥

(ङ) हमें किसी कार्य के लिए अत्यधिक व्याकुल नहीं होना चाहिए।

उत्तर— कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर।
समय पाइ तरुवर फले, केतक सींचो नीर ॥

पाठ से आगे—

प्रश्न 1. ऐसे कोई दो अवसरों की चर्चा कीजिए जब आप दूसरों के लिए काम कर रहे थे और आपको उसका लाभ मिला है।

उत्तर—प्रथम अवसर—मैं अपने घर पर कुछ साथियों को बुलाकर कुछ प्रश्न पूछते थे जो याद हो। ऐसा करने से हमारे छात्र-मित्र तो समझते थे कि मैं केवल दूसरों की तैयारी को परखने में समय बीताता हूँ लेकिन जितने प्रश्न मैं पूछता और वे उत्तर देते सब मुझे समझ में आ जाता था और मैं परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

दूसरा अवसर—मुझे सुधुवा जानकर हमारे वर्ग के छात्र अपनी कॉपियाँ हमारे घर पहुँचा देते थे और मैं भी उनकी कॉपियाँ में अलिखित प्रश्न के उत्तर लिखा करते थे। प्रारम्भ में मेरी लिखावट अच्छी नहीं थी। परन्तु अब लिखावट बहुत सुन्दर हो गयी है। क्योंकि मैंने दूसरों के लिए बहुत लिखा।

प्रश्न 2. परोपकार से आप क्या समझते हैं ? ऐसे कार्यों की सूची बनाइए जिन्हें आप परोपकार का कार्य समझते हैं।

उत्तर—परोपकार का अर्थ दूसरों के हित के लिए काम करना।

कुछ परोपकार कार्यों की सूची निम्न प्रकार हैं—

(i) कुआँ खोदवाना या नलकूप लगवाना।
(ii) तालाब का निर्माण करना।
(iii) पेड़ लगाना।
(iv) तलाब या नदी की सफाई करना।
(v) स्कूल खुलवाना।

व्याकरण

प्रश्न 1. समान अर्थ वाले शब्दों को मिलाइए—

राखों	**काम**
अठिलाना	**निकालना**
सरवर	**इतराना**
निकसत	**रखना**
कारज	**तालाब**

उत्तर—

राखों	रखना
अठिलाना	इतराना
सरवर	तालाब
निकसत	निकलना
कारज	काम

कुछ करने को—

प्रश्न 1. दस परोपकारी व्यक्ति की सूची बनाइए। उनके सामने उनके द्वारा किये गये परोपकार के कार्यों को भी लिखिए—

उत्तर—

नाम		कार्य
(i) श्रीमती भगवती देवी	—	विद्यालय खुलवाना
(ii) महात्मा गाँधी	—	देश को आजाद करवाना
(iii) रामबालक राय	—	कॉलेज खुलवाना
(iv) सियाशरण सिंह	—	कुआँ खुदवाना
(v) पशपति नाथ	—	नलकूप लगवाना
(vi) दीपक चौधरी	—	पेड़ लगाना
(vii) महेन्द्र सिंह	—	तालाब खुदवाना इत्यादि